समृद्ध हैं आस्ट्रो-एशियाटिक भाषाएं

- साहित्य अकादमी का 'संताली साहित्य में जीवनी व आत्मकथाएं' विषय पर संगोष्ठी आयोजित

संवाददाता ▷ रांची

संगोष्ठी का उदघाटन करते रणेंद्र कुमार और अन्य.

डॉ रामदयाल मुंडा ट्राइबल वेलफेयर रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक रणेंद्र कुमार ने कहा कि जब पीओ बोडिंग ने संताली का शब्दकोश तैयार किया, तब यह दस खंडों में था. फादर जेबी हॉफमैन ने 16 खंडों में मुंडारी शब्दों की व्याख्या की थी. यह बतलाता है कि आस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार की ये भाषाएं सांस्कृतिक तौर पर कितनी समृद्ध संपन्न हैं. वह 'संताली साहित्य में जीवनी व आत्मकथाएं' विषयक संगोष्ठी में बोल रहे थे. इसका आयोजन साहित्य अकादमी और डॉ रामदयाल मुंडा ट्राइबल वेलफेयर रिसर्च इंस्टीट्यूट ने संयुक्त रूप से किया था.

उन्होंने कहा कि इन भाषाओं की वैज्ञानिकता और समृद्धि जब हिंदी में आयेगी, तब दूसरों को भी इनकी महत्ता समझ में आयेगी. साहित्य अकादमी के संताली एडवाइजरी बोर्ड के संयोजक मदन मोहन सोरेन ने कहा कि संताली में काफी कहानियां, कविताएं, उपन्यास आदि प्रकाशित हो रहे हैं, लेकिन जीवनी व आत्मकथाओं की संख्या नगण्य हैं. 'नारी चेतना' सत्र में गायिका चित्ता बेसरा ने उड़िया गीत 'अमा इयां नादुलर..' प्रस्तुत किया. उन्होंने सौ से अधिक गीत गाये हैं. वहीं, 'कथा संधि' सत्र में मंगत मुर्मू ने अपनी कहानी 'सीमा बिटिया बापला' का पाठ किया. अकादमिक सत्र में आदित्य मंडी, लखय बास्के, श्याम टुडू और श्रीकांत सोरेन ने अपना पत्र प्रस्तुत किया. कार्यक्रम में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के अध्यक्ष डॉ त्रिवेणी नाथ साहू, सियाराम झा, गणेश ठाकुर हंसदा, महादेव टोप्पो आदि थे.

प्रभात खबर
Mon, 08 July 2019
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/41179805